THE LEGEND

The Sharda Yatra temple, Teetwal, Kashmir is located on the pilgrimage route to Sharda Peeth PoK. From ancient times, an annual pilgrimage to the Sharda Peeth took place on the ashtami (eighth day) of Shukla Paksha (waxing phase) of Bhadrapada month of the lunar calendar. A holy mace (charri Mubarak) would be taken out from Teetwal to Sharda Peeth. This would be the official pilgrimage to Sharda peeth, out of the four traditional routes (Keran, Liddervan-Jumangarh, Gurez, Teetwal)

Sharda Peeth was once the center of learning of the Indian Subcontinent to which scholars flocked in reverence seeking scriptural and spiritual knowledge. Sharda script native to Kashmir is named after the Goddess Sharda (also invoked as the Goddess Saraswati), the goddess of learning and the main deity of the Sharda Peeth. One of the maha shakti peeths, Goddess Sati's right hand is believed to have landed here. The Sagar Manthana(nectar) was carried by Myna (Brown coloured bird called Haerr in local dialect here) in her beak and was finally placed here. Two drops of nectar were spilled at Kaloosa in Bandipora and Gagloosa in kupwara, forming natural shilas. After long penance, Rishi Shandiliya was bestowed with darshan of Sharda Mai near Tejuvan village in the vicinity of Sharda Peeth.

Yogiraj Swami Nand Lal Koul Ji, a Kashmiri saint was the last to sit and manage Sharda peeth (POK) and migrated to Tikker in Kupwara in December 1948 after partition & tribal raids.

The Sharda Yatra temple at Teetwal was destroyed/burnt down in the aftermath of the partition and the subsequent tribal invasions which also resulted in the holy pilgrimage being abandoned. A gurudwara stood adjacent to this temple which was also destroyed. The locals preserved & handed over this plot to Save Sharda Committee Kashmir regd. headed by Ravinder Pandita on 14 Sept. 2021 on the occasion of annual Sharda Yatra upto the last point of LOC in Teetwal.

While digging on the ground where the temple used to exist, remnants of the earlier structure were found in the form of partial stone structure of the earlier temple, burnt wood frames, nuts and bolts and a smoking chillum.

The architecture and construction of this temple is in keeping with the heritage of the Sharda Peeth for which carved granite stone from Bidadi, Karnataka, duly supported by Sharda Peetham Sringeri has been used.

The Panchloha Sharda murti donated by Sringeri Mutt is being taken to this newly constructed Sharda Temple at LoC Teetwal Kashmir beginning on 24 January'2023(Guru Tritya – annual Convocation day in Sharda University in ancient times) & shall be consecrated at Teetwal Temple on Chaitra maas Shukla Paksh pratipada on Navreh(Ist. Navratra) 22nd March'2023.

The reconstruction of the temple is a step towards the revival of the ancient annual pilgrimage to the Sharda Peeth, which is in ruins and situated in Shardi, PoK as well as the exploration of Sharda Civilization.

शारदा मठ - पौराणिक कथा

शारदा यात्रा मंदिर, तीतवाल, कश्मीर शारदा पीठ (POK) के तीर्थ यात्रा मार्ग पर स्थित है। प्राचीन काल से, चंद्र कैलेंडर के भाद्रपद महीने के शुक्ल पक्ष की अष्टमी (आठवें दिन) को शारदा पीठ की वार्षिक तीर्थयात्रा होती थी। तीतवाल से शारदा पीठ तक पवित्र गदा (छड़ी मुबारक) निकाली जाती थी । चार पारंपरिक मार्गों (केरन, लिद्दरवन-जुमनगढ़, गुरेज, तीतवाल) में से शारदा पीठ की यह आधिकारिक तीर्थयात्रा हुआ करती थी ।

शारदा पीठ एक समय भारतीय उपमहाद्वीप की शिक्षा का केंद्र था, जहां शास्त्र और आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए विद्वान श्रद्धा से दूर दूर से आते थे। शारदा कश्मीर की मूल लिपि है, जिसका नाम देवी शारदा (देवी सरस्वती के रूप में भी जाना जाता है), विद्या की देवी और शारदा पीठ की मुख्य देवी के नाम पर रखा गया है।

माना जाता है कि महाशक्ति पीठों में से एक, देवी सती का दाहिना हाथ यहां अवतारित हुआ था।

सागर मंथन (अमृत) को मैना (भूरे रंग की चिड़िया जिसे स्थानीय बोली में हैर कहा जाता है) अपनी चोंच में लेकर आई और अंत में यहां रख दी गई। बांदीपोरा के कालूसा और कुपवाड़ा के गगलूसा में अमृत की दो बूंदें छलक गईं, जिससे प्राकृतिक शिला बन गई।

लंबी तपस्या के बाद, ऋषि शांडिल्य को शारदा पीठ के आसपास के तेजुवन गांव के पास शारदा माई के दर्शन हुए।

योगिराज स्वामी नंद लाल कौल जी, एक कश्मीरी संत, शारदा पीठ (पीओके) में बैठने और प्रबंधन करने वाले अंतिम संत महापुरुष थे और देश के विभाजन व कश्मीर पर कबालि हमले के बाद दिसंबर 1948 में कुपवाड़ा के टिक्कर चले आये।

तीतवाल में शारदा यात्रा मंदिर विभाजन और कबायली आक्रमणकारियों ने नष्ट/जला दिया गया था और इसके परिणामस्वरूप पवित्र तीर्थ यात्रा बन्द हो गयी है । इस मंदिर के बगल में एक गुरुद्वारा था जिसे भी नष्ट कर दिया गया था। स्थानीय लोगों ने इस भूखंड को बचा लिया और 14 सितंबर 2021 को तीतवाल में एलओसी के अंतिम बिंदु तक वार्षिक शारदा यात्रा के अवसर पर रविंदर पंडिता अध्यक्षत सेव शारदा समिति को सौंप दिया।

उस जमीन पर खुदाई करते समय जहां मंदिर मौजूद था, पहले के ढांचे के अवशेष पहले के मंदिर के आंशिक पत्थर की संरचना, जले हुए लकड़ी के फ्रेम, नट और बोल्ट और एक धूम्रपान चिलम के रूप में पाए गए थे।

इस मंदिर की वास्तुकला और निर्माण शारदा पीठ की विरासत को ध्यान में रखते हुए किया गया है, जिसके लिए शारदा पीठम श्रृंगेरी द्वारा समर्थित कर्नाटक के बिदादी से नक्काशीदार ग्रेनाइट पत्थर का उपयोग किया गया है।

श्रृंगेरी मठ द्वारा दान की गई पंचलोहा शारदा मूर्ति को 24 जनवरी, 2023 (गुरु तृतीया - प्राचीन काल में शारदा विश्वविद्यालय में वार्षिक दीक्षांत समारोह) से शुरू होकर एलओसी तीतवाल कश्मीर में इस नवनिर्मित शारदा मंदिर में ले जाया जा रहा है और चैत्र के मास शुक्ल पक्ष प्रतिपदा नवरेह (प्रथम नवरात्र) 22 मार्च को तीतवाल मंदिर में प्रतिष्ठित किया जाएगा।

मंदिर का पुनर्निर्माण शारदा पीठ की प्राचीन वार्षिक तीर्थयात्रा के पुनरुद्धार की दिशा में एक कदम है, जो खंडहर में है और शारदी, पीओके में स्थित है और साथ ही शारदा सभ्यता की खोज भी है।